**ओ३म्**

**--वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में शरदुत्सव का समापन दिवस--**

**‘ब्राह्मण वर्ग के वेदाध्ययन से दूर होने से देश व संसार का पतन हुआ: उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के पांच दिवसीय शरदुत्सव के आज समापन दिवस 11 अक्तूबर, 2015 के सभी कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक योग, ध्यान, प्राणायाम व आसनों का प्रशिक्षण स्वामी दिव्यानन्द जी ने धर्मप्रेमियों को दिया। प्रातः 6.30 बजे से अथर्ववेद पारायण यज्ञ आरम्भ हुआ जिसकी आज पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। यज्ञ के पश्चात अथववेद परायण यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी ने यज्ञ में भाग लेने वाले सभी यज्ञ प्रेमियों को आशीर्वाद प्रदान किया। यज्ञ के बाद का कार्यालय आश्रम के विशाल सभागार में आरम्भ हुआ।

आज के आयोजन का मुख्य आकर्षण आर्य विद्वान आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का समाज व देश के लिए हितकारी उद्बोधन व प्रवचन था। उन्होंने कहा कि देश को पतन का कारण है ब्राह्मण वर्ग का वेद के ज्ञान से हटना। चार वर्ण है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण अतीत में अन्य तीन वर्णों का मार्ग दर्शन करते रहे। लेकिन जब ब्राह्मण वेदविहीन हो गया, तो समाज का मार्गदर्शन करने वाला ही कोई नहीं रहा। तब इसका भयंकर परिणाम समाज में आया जिसे महाभारत काल के 5000 वर्षो बाद भी हमें भुगतना पड़ रहा है। यह दुःखदायी परिणाम ब्राह्मणों के वेद विहीन होने के कारण भुगतना पड़ रहा है। ब्राह्मण का कार्य वेद का अध्ययन व प्रचार करना था। ब्राह्मण का धन यह भौतिक धन नहीं था अपितु ब्राह्मण का वास्तविक धन वेद था। जब ब्राह्मण भौतिक धन के चक्कर में आ गया और वह कार, कोठी और रूपये कमाने लगा तो वेद के पढ़ने वालों का लोप हो गया। इससे ज्ञान का लोप होकर अंधकार हो गया और इतना अंधकार छाया कि पशुओं को काट-2 कर उनके मांस की यज्ञों में आहुतियां दी जाने लगी। स्त्रियों को पुरूषों के मर जाने पर जिन्दा जलाया जाने लगा। स्त्रियों को प्रताणित करने वाले यह लोग शंख, घण्टे व घडि़याल बजाते थे जिससे कोई स्त्री की चीख व चिल्लाने की आवाज को न सुन सके। लड़की पैदा होते ही मार दी जाती थीं। इसके प्रमाण हमारे पास हैं परन्तु समयाभाव के कारण उसे अभी प्रस्तुत नहीं कर सकते। इतना बताना है कि देश व समाज में किना अन्धकार छा गया था। अन्धकार के इस वातावरण में महर्षि दयानन्द रूपी एक प्रकाश की किरण गुजरात में पैदा हुई और उस किरण ने ऐसा कार्य किया कि हम सब लोग उस किरण के पीछे ही तो दौड़ रहे हैं। वही किरण तो आप लोगों के अन्दर काम कर रही है। दयानन्द ने क्या काम किया? दयानन्द ने कहा कि वेद वह ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ ईश्वर ने दिया था। ऋषि दयानन्द ने कसौटी हमें दी है, जो इस कसौटी पर खरा उतरे, वही ईश्वर का ज्ञान है। उन्होंने कसौटी दी कि जो ज्ञान सृष्टि में सबसे पहले आता है वही ईश्वरीय ज्ञान होता है। दुनिया में जितने भी पुराण, कुरान, बाईबिल आदि ग्रन्थ हैं, यह ईश्वरीय ज्ञान नहीं है। क्यों नहीं हैं? क्योंकि यह किताबें पिछले तीन-चार हजार वर्षों में पृथिवी पर आईं हैं। इससे पहले इन किताबों व इनके पैगम्बरों का कोई वजूद ही नहीं था। आज से 1600 साल पहले न पैगम्बर साहब थे और न कुरान थी। 2015 साल पहले न ईसाई थे, न ईसाई धर्म था, न हि ईसा मसीह थे और न बाइबिल पुस्तक थी। इसी तरह पिछले तीन-चार हजार सालों में सारी किताबों का जन्म हुआ, सारे गुरूओं का जन्म हुआ और सारे मत-मतान्तरों का जन्म हुआ। इससे पहले एकमात्र वेद ज्ञान था और सारी पृथिवी पर आर्य राज्य था। भूमण्डल पर आपका राज्य था। विद्वान वक्ता का यह व्याख्यान काफी लम्बा एवं महत्वपूर्ण है। इसका शेष भाग इस भाग साहित कुछ दिनों बाद हम आपकी सेवा में प्रस्तुत करेंगे।

आयोजन में एक प्रवचन गुरूकुल पौन्धा के आचार्य डा. यज्ञवीर का हुआ। उन्होंने कहा कि वेद, वैदिक धर्म एवं संस्कृति के अनुसार प्रत्येक मनुष्य वेद अथवा ज्ञान से युक्त सत्ता है, इसलिए उसका असली नाम ‘वेद’ है। उन्होंने कहा कि संसार के सभी विद्वान स्वीकार करते हैं कि वेद संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है। इस तथ्य को संसार के विद्वानों से स्वीकार कराने का श्रेय महर्षि दयानन्द को उन्होंने दिया। उन्होंने बताया कि स्वामी दयानन्द ने ही स्त्रियों व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार दिया। स्त्रियों व शूद्रों को सुशिक्षित करने का स्वामी दयानन्द ने व्यापक स्तर पर कार्य किया। उन्होंने स्वामी शंकराचार्य जी के मत अद्वैतवाद को प्रस्तुत कर उस पर स्वामी दयानन्द का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए बताया कि उन्होंने नास्तिकता को समाप्त करने के लिए अद्वैतवाद को सम्मुख कर शास्त्रार्थ किया था। गुरूकुल पौन्धा के ब्रह्मचारी प्रताप कुमार ने भी अपने ओजस्वी व देशभक्तिपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हुए गोरक्षा का उल्लेख कर कहा कि गाय सारे विश्व की मां है। उन्होंने रासलीला को निन्दीय बताया और कहा कि यह योगिराज श्री कृष्ण जी के वास्तविक चरित्र के विरूद्ध है।

सत्संग सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड के यशस्वी प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी जी ने भी सम्बोधित किया। आप 6 सौ किलोमीटर की यात्रा कर वागेश्वर से देहरादून अपने साथी व सहयोगियों सहित कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे थे। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द का उद्देश्य किसी नये मत व धर्म को स्थापित करना नहीं था अपितु उनका उद्देश्य विश्व के मानवमात्र का कल्याण करना था। उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा हरिद्वार में कुम्भ मेले के अवसर पर फहराई गई पाखण्ड खण्डिनी पताका का उल्लेख कर उनके साहस की सराहना की और कहा कि आज भी हम ऐसा साहस नहीं दिखा पाते। जन्मना जाति का उल्लेख कर उन्होंने इसके दोषों का दर्शन कराया। उन्होंने धर्मप्रेमियों को बताया कि स्वामी दयानन्द ने जन्मना जातिवाद का जमकर विरोध किया था और गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था का सत्य स्वरूप देश व समाज के सम्मुख रखा था। ओजस्वी वक्ता ने कहा कि उनके गुरू स्वामी विरजानन्द ने दक्षिणा में स्वामी दयानन्द से उनका जीवन मांगा जो उन्होंने उनको समर्पित किया था। उन्होंने आगे कहा कि हमें आर्य समाज को गांव-गांव तथा देहात-देहात में ले जाना होगा। उन्होंने शास्त्रार्थ को पुनर्जीवित करने का भी आह्वान किया। आर्यनेता ने उत्तराखण्ड में पिछले दिनों दलितों के मन्दिर प्रवेश की घटना की चर्चा कर दलितों की मांग को उचित कहकर उसका समर्थन किया। साथ हि उन्होंने कहा कि सैद्धान्तिक दृष्टि से मूर्तिपूजा से सहमत न होने पर भी हम दलितों के मन्दिर प्रवेश के अधिकार का समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज वसुधैव कुटुम्बकम और मनुर्भव की बात करता है। इसलियें सभी दलित भाईयों व अन्य बन्धुओं को भी आर्यसमाज से जुड़ना चाहिये। दलित समाज व देश का हित उनके आर्यसमाज से जुड़ने में ही है।

आज के आयोजन में आर्य जगत के विख्यात गीतकार एवं गायक श्री सत्यपाल पथिक जी के भजन भी हुए। उनका भजन था **‘मैं पागल हूं, मस्ताना हूं, दीवाना हूं, मैं मस्त-मस्त मस्ताना हूं। जो शमा जलाई ऋषिवर ने उस शमा का मैं परवाना हूं।।’** भजन को श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया जिसका प्रमाण भजन की समाप्ती पर बजने वाली श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट थी। भजनोपदेशक श्री आजाद सिंह लहरी, सहारनपुर ने भजन **‘वो समय प्रभु कब आयेगा, जब इस धरती पर मानव मानव बन जायेगा।’** को मधुर स्वरों में गाकर प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रूहेलसिंह आर्य ने भी एक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **‘डर है कि जिन्दगी कहीं नाकाम न हो जाये, ये भूमि है राम कृष्ण की बर्बाद न हो जाये।’** भजन प्रेरणादायक एवं कर्तव्यबोधक था। द्रोणस्थली कन्या गुरूकुल की 6 कन्याओं ने भी एक सामूहिक भजन प्रस्तुत किया। उत्सव में अनेक प्रमुख अतिथियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों सहित आश्रम के मुख्य मुख्य सहायकों का भी सम्मान किया गया।

कार्यक्रम की समाप्ती पर आर्यजगत के वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी दिव्यानन्द जी ने सभी को आशीर्वाद दिया। सभा को वैदिक साधन आश्रम के यशस्वी मंत्री इं. श्री प्रेमप्रकाश शर्मा एवं दानवीर, विनम्र स्वभाव एवं सबका सम्मान करनेवाले यशस्वी प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी ने भी सम्बोधित किया। आप दोनों ने दूर दूर से शरदुत्सव में भाग लेने वाले बन्धुओं का आभार व्यक्त कर उनका धन्यवाद करने के साथ सबसे तपोवन के प्रति प्रेम भाव बनाये रखने और यथाशक्ति सहयोग करने की अपील की। कार्यक्रम का संचालन श्री सलिक चन्द शैलेश ने बहुत योग्यतापूर्वक किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**--वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून में शरदुत्सव का चौथा दिन--**

**‘गुरूकुलों से ही वेदों के विद्वान मिलते हैं व मिलेंगे इसलिये इनकी यथाशक्ति आर्थिक सहायता करें: उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के पांच दिवसीय शरदुत्सव के आज चैथे दिन 10 अक्तूबर, 2015 के कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक योग, ध्यान, प्राणायाम व आसनों का प्रशिक्षण स्वामी दिव्यानन्द जी ने दिया। प्रातः 6.30 बजे से अथर्ववेद पारायण यज्ञ आरम्भ हुआ जिसके सम्पन्न होने के बाद श्री सत्यपाल पथिक जी का एक भजन व आर्य विद्वान आचार्य उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का प्रवचन हुआ। आज के प्रवचन का विषय जन्म दिवस मनाने की भारतीय वैदिक पद्धति तथा पाश्चात्य पद्धति का विवेचन था। कार्यक्रम की समाप्ति पर तपोवन आश्रम से लगभग 4 किमी. दूर पहाडि़यों पर स्थित पांच बीघा भूमि में स्थित व चारों ओर से साल के घने वृक्षों से आच्छादिन तपोवन वा तपोभूमि जहां समय समय पर महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी योगेश्वरानन्द, महात्मा प्रभु आश्रित जी, स्वामी दयानन्द जी आदि अनेक महापुरूषों ने योग व ध्यान साधन की है उस तपोभूमि पर सत्संग का सफलतापूर्वक आयोजन सम्पन्न हुआ।

पहाडि़यों पर स्थित तपोभूमि पर सत्संग में श्री आजद सिंह लहरी एवं अनेक माताओं के भजन व अनेक प्रस्तुतियां हुई। मुख्य प्रवचन डा. वीरपाल विद्यालंकार एवं आर्य विद्वान श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ जी का हुआ। श्री कुलश्रेष्ठ ने गुरूकुलों के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि संसार में ऐसा कोई विद्यालय व विश्व विद्यालय नहीं है जहां विद्यार्थियों को वेद पढ़ायें जाते हों। यह कार्य केवल आर्य समाज के गुरूकुल ही करते हैं। इस लिए सभी आर्य बन्धुओं को गुरूकुलों की यथासम्भव सहायता करनी चाहिये। उन्होंने कहा कि प्रसिद्ध योग प्रचारक स्वामी रामदेव जी गुरूकुल कालवां, हरियाणा की ही देन है। यदि किसी ने गुरूकुल के लिए भूमि व अन्य अन्य वस्तुओं व द्रव्यों का दान न दिया होता तो आज देश को स्वामी रामदेव न मिलते। उन्होंने महर्षि दयानन्द व स्वामी विरजानन्द जी के जीवन का उल्लेख कर कहा कि यदि स्वामी विरजानन्द मथुरा में अपना गुरूकुल न चलाते तो हमें स्वामी दयानन्द जी भी न मिलते। इस प्रसंग को उन्होंने विस्तार पूर्वक बताया जो अत्यन्त प्रभावशाली था। वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम की महत्ता को भी आपने रेखांकित किया। आपने अन्य मतों के अच्छे कार्यों का भी वर्णन किया और कहा कि आर्यसमाजों में हर समय ऋषि लंगर व बाहर से आने वालों के लिए सभी प्रकार की सुख सुविधायें प्रदान की जानी चाहिये तभी लोगों का आर्य समाज पर विश्वास पक्का होगा। उन्होंने गुरूद्वारों में बिना किसी से धर्म, जाति, रंग व रूप का अन्तर किये सबको हर संमय लंगर उपलब्ध कराने के सेवा कार्य की बहुत प्रशंसा की और आर्यसमाज को इस व अन्य सभी अच्छे कार्येां को आचरण में लाने को कहा। डा. वीरपाल जी ने आर्यसमाज में व्यवस्था में सुधार का मुद्दा उठाया और कहा कि व्यवस्था में अनेकविध सुधार की आवश्यकता है। स्वामी दिव्यानन्द जी ने सबको ध्यान व योग का संक्षिप्त अभ्यास कराया और योग व ध्यान के लिए सबसे अधिक उपयुक्त इस तपोभूमि के महत्व से परिचित कराकर इसकी भूरि भूरि प्रशंसा कीं। शान्ति पाठ के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तपोवन में रात्रि 8 बजे से 10.30 बजे तक संगीत सन्ध्या का भी आयोजन सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में गायिका मीनाक्षी पंवार, रीना खेरा एवं मिथलेश आर्या जी ने अपनी संगीतमय प्रस्तुतियां की। समीक्षक श्री सत्यपाल पथिक जी ने सभी प्रस्तुतियों को सराहा और कहा कि बहिन रीना खेरा की प्रस्तुति तो राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों में प्रस्तुत करने योग्य थी। कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हुआ।

-मनमोहन कुमार आर्य

पताः 196 चुक्खूवाला-2

देहरादून-248001

फोनः09412985121